2. पृथ्वीराज चौहान के 'बानबेध समय' का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। (14)

अथवा

'बानबेध समय' का ऐतिहासिक और साहित्यिक महत्व बताइए।

3. विद्यापित के काव्य की प्रमुख विशेषतांओं को लिखिए। (14)

अथवा

विद्यापति के काव्य में लोकजीवन से जुड़ाव का विस्तृत मूल्यांकन हुआ है, सिद्ध कीजिए।

4. कबीरदास के समाज-सुधारक रूप पर प्रकाश डालिए। (14)

अथवा

कबीरदास के काव्य के भावपक्ष और कलापक्ष का विस्तृत विश्लेषण कीजिए।

5. मलिक मुहम्मद जायसी के काव्य में व्यक्त रहस्यवाद को समझाइए। (14)

अथवा

'मानसरोदक खण्ड' के आधार पर पद्मावती का सौंदर्य चित्रण कीजिए।

6. किसी **एक** विषय पर टिंप्पणी लिखिए : (7)

(क) मानसरोदक खण्ड की कथावस्तु

(ख) जायसी की प्रतींकात्मकता

(ग) कबीर का रहस्यवाद

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 5074 **K**

Unique Paper Code : 2052101101

Name of the Paper : Hindi Kavita : Aadikal Evam Nirgunbhakti Kavya

हिंदी कविता : आदिकाल एवं निर्गुण भक्ति काव्य

Name of the Course : **B.A. (HONS.) Hindi: DSC-I**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (9×3=27)

(क) देषि चंद मन मंद। साहि आनंद उपन्नौ ।।
निजरि अप्प सुविहान। वोलि आलम अप लिन्नो ।।
हव्य अप्पि दसतक्क। वत्त पुच्छी दुष सुष वर ।।

विधि विधान निम्मयौ। करन उद्देस कविय वर ।।
संग्राम स्वाम मयौं मुक्कयो। क्यों कविंद्र भारथ्य तजि ।।
किहि घांन लोइ संभरि धनी। कहौ सुवत्त लज्जो न लजि ।।

अथवा

जममुनाक तिर उपवन उदवेगल
फिर फिर ततहि निहारी।
गौरस बिके निके अबइते जाइते
जनि जनि पुंछ वनवारि ।।
तोहे मतिमान सुमति मधसूदन
वचन सुनह किछु मोरा।
भनइ विद्यापति सुन बरजौवति
वन्दह नन्दकिसोरा ।।

(ख) राम नाम के पटतरे, देबे कौ कछ नाहिं।
क्या ले गुर संतोषिए, हौंस रही मन मांहि ।।
सतगुर मार्या बाण भरिं, धरि करि सूधीं मूठि।
अंगि उघाड़े लागिया, गई दवा सूँ फूटि ।।

अथवा

कहा नर गरबसि थोरी बात।
मन दस नाज टका दस गठिया, टेढ़ों टेढ़ो जात ।। टेक ।।
कहा ले आयौ यहु धन कोऊ, कहा कोऊ लै जात ।।
दिवस चारि की है पतिसाही, ज्यूं बनि हरियल पात ।।
राजा भयौ गांव सौ पाये, टका लाख दस बात ।।

रावन होत लंका को छत्रपति, पल मैं गई बिहात ।।
माता पिता लोक सुत बनिता, अंत न चले संगात ।।
कहै कबीर राम भजि बौरे, जनम अकारथ जात ।।

(ग) खेलत मानसरोवर गई। जाई पाल पर ठाढ़ी भई ।।
देखि सरोवर हंसे कुलेली। पद्मावति सौं कहहिं सहेली ।।
ए रानी! मन देखु बिचारी। एहि नैहर रहना दिन चारी ।।
लो लगि अहै पिता कर राजू। खेलि लेहु जौ खेलहु आजू ।।
पुनि सासुर हम गवनब काली। कित हम, कित यह सरवर पाली ।।
कित आवन पुनि अपने हाथा। कित मिलि कै खेलब एक साथा ।।
सासु ननद बोलिन्ह जिठ लेही। दारून ससुर न निसरे देहीं।
पिउ पियार सिर ऊपर, पुनि सो करै दहुँ काह।
दहुँ सुख राखै की दुख, देहुँ कस जनम निबाह ।।

अथवा

सखी एक तेइ खेल न जाना। भै अचेत मनिहार गवाँना ।।
कवँल डार गहि भै बेकरारां। कासों पुकारीं आपन हारा।
कित खेलै आइउँ एहि साथा। हार गँवाइ चलिऊँ लेइ हाथा ।।
घर पैठत पूँछब यह हारू। कौन उतर पाउब पैसारू ।।
नैन सीप आँसू तस भरे। जानौ मोति गिरहिं सब ढरे ।।
सखिन कहा बौरी कोकिला। कौन मानि जेहि पौन न मिला?
हार गँवाइ सो ऐसे रोवा। हेरि हेराइ लेइ जौ खोवा ।।
लागीं सब मिलि हेरै, बूड़ि बूड़ि एक साथ।
कोई उठी मोती लेइ, काहू घोंघा हाथ ।।